आदमी को प्यार दो

सूनी-सूनी जिन्दगी की राह है,
भटकी-भटकी हर नजर निगाह है,
राह को सँवार दो, निगाह को निखार दो ।
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।

जलते हुए आँसुओं की आरती उतार लो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।।

तुम हो एक फूल कल जो धूल बन के जायेगा,
आज है हवा में कल जमीं पर ही आयेगा,
जाते वक्त बाग बहुत रोयेगा-रुलायेगा,
खाक के सिवा मगर न हाथ कुछ भी आयेगा ।

जिंदगी की खाक लिये साथ में,
बुझते-बुझते सपने लिये साथ में,
रुक रहा हो जो उसे पुकार दो,
चल रहा ही उसका पथ बुहार दो ।

आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।। १ ।।

जिंदगी ये क्या है बस सुबह का एक नाम है,
पीछे जिसके रात है और आगे जिसके शाम है,
एक ओर छाँह सघन, एक ओर घाम है,
जलना-बुझना, बुझना-जलना सिर्फ जिसका काम है,
न कोई रोक-थाम है ।

खौफनाक गारो बियाबान में,
मरघटों के मुर्दा सुनसान में,
बुझ रहा हो जो उसे अंगार दो
जल रहा हो जो उसे बयार दो,

आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।। २ ।।

जिंदगी की आँख पर जो मौत का खुमार है,
और प्राण को किसी पिया का इंतजार है,
मन की मनचली कली तो चाहती बहार है,
किंतु तन की डाली को पतझड से प्यार है,
करार है ।

पतझड के पीले-पीले वेश में,
आँधियों के काले-काले देश में,
खिल रहा हो जो उसे सिंगार दो
झर रहा हो जो उसे बहार दो ।

आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।। ३ ।।

प्राण एक गायक है, दर्द एक तराना है,
जन्म एक तार है जो मौत को बजाना है,
स्वर ही रे जीवन है, साँस तो बहाना है,
प्यार एक गीत है जो बार-बार गाना है,
सबको दुहराना है ।

साँस की सिसक रही सितार पर,
आँसुओं के गीले-गीले तार पर,
चुप जो हो उसे जरा पुकार दो,
गा रहा हो जो उसे मल्हार दो ।

आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।। ४ ।।

एक चाँद के बगैर सारी रात स्याह है,
एक फूल के बिना चमन सभी तबाह है,
जिंदगी तो खुद ही एक आह है, कराह है,
प्यार भी न जो मिले तो जीना फिर गुनाह है ।

धूल के पवित्र नेत्र-नीर से
आदमी के दर्द, दाह, पीर से,
जो घृणा करे, उसे बिसार दो
प्यार करे उस पे दिल निसार दो

आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।। ५ ।।

सूनी-सूनी जिन्दगी की राह है,
भटकी-भटकी हर नजर निगाह है,
राह को सँवार दो, निगाह को निखार दो ।
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।

जलते हुए आँसुओं की आरती उतार लो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो ।।

— नीरज